SHABDBRAHM E-ISSN: 3049 4230
VOLUME 1, ISSUE 2, OCTOBER 2025

भारत के विलीनीकरण में सरदार पटेल का योगदान

डॉ. दक्षाबहन पी. सोलंकी

अध्यापक , हिंदी विभाग

श्री एस. डी. पटेल आर्ट्स एंड सी. एम. पटेल कॉमर्स कॉलेज, आंकलाव

प्रस्तावना (Introduction)

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और स्वतंत्रता उपरांत राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के इतिहास में **सरदार वल्लभभाई पटेल** का योगदान अत्यंत विशिष्ट और अमूल्य है। वे केवल एक राजनीतिक नेता नहीं, बल्कि ऐसे राष्ट्र-नायक थे जिनकी दूरदर्शिता, कठोर नीतिनिष्ठा, अदम्य साहस और प्रशासनिक क्षमता ने भारत को एक सशक्त राष्ट्र के रूप में संगठित किया। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान उन्होंने गांधीवादी सिद्धांतों-सत्य, अहिंसा और जन-संगठन-को व्यवहार में रूपांतरित किया। उनकी कार्यशैली इस बात का प्रमाण दे रही है की दृढ़ नेतृत्व और सामूहिक शक्ति के दम पर किसी भी अन्यायपूर्ण सत्ता को चुनौती दी जा सकती है।

स्वतंत्रता के बाद उनका योगदान और भी व्यापक बना। 1947 में भारत के सामने **562 रियासतों के एकीकरण**, सीमा-विवाद, आंतरिक अस्थिरता, विभाजन-जनित हिंसा और प्रशासनिक अव्यवस्था जैसी गंभीर चुनौतियाँ थीं। ऐसे कठिन समय में पटेल ने निर्णय-क्षमता, कूटनीति और दृढ़ता का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किया। यही कारण है कि उन्हें **"भारत का लौहपुरुष"**, **"राष्ट्र-एकता का शिल्पी"** और आधुनिक भारतीय प्रशासन का **मुख्य स्थापक** कहा जाता है।

उनका व्यक्तित्व भारतीय राजनीतिक इतिहास में एक प्रेरणा है-जहाँ व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा से ऊपर उठकर राष्ट्रहित सर्वोपरि रहता है। आज भी, जब भारत विविधता से भरे विशाल समाज के साथ आगे बढ़ रहा है, पटेल के विचार राष्ट्रीय एकता, सुरक्षा, प्रशासनिक दक्षता और सशक्त नेतृत्व के मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में महत्वपूर्ण हैं।

सरदार पटेल का प्रारंभिक जीवन एवं वैचारिक विकास

31 अक्टूबर 1875 को गुजरात के नडियाद में जन्मे वल्लभभाई पटेल का प्रारंभिक जीवन सरल और संघर्ष पूर्ण था। वे एक साधारण किसान परिवार में जन्मे थे, जहाँ परिश्रम और आत्मनिर्भरता जीवन का मूल आधार माना जाता था। आर्थिक एवं सामाजिक सीमाओं के बावजूद वल्लभभाई बाल्यकाल से ही बुद्धिमान, आत्मसम्मानी और दृढ़ चरित्र के व्यक्ति थे।

युवावस्था में उन्होंने कानून की पढ़ाई करने का निर्णय लिया, और अपने खर्च स्वयं निकालते हुए इंग्लैंड जाकर लॉ की डिग्री प्राप्त की। यह उनके जीवन का निर्णायक मोड़ था, जिसने उनके व्यक्तित्व में आधुनिक सोच, विश्लेषण-क्षमता और प्रशासनिक दृढ़ता का विकास किया। वकालत में उन्होंने अद्भुत प्रतिष्ठा प्राप्त की और वे गुजरात के प्रमुख वकीलों में गिने जाने लगे।

लेकिन उनके जीवन का सबसे गहरा प्रभाव **महात्मा गांधी** के विचारों ने डाला। गांधीजी से प्रेरित होकर उन्होंने अपना सफल वकालत-व्यवसाय छोड़ स्वतंत्रता आंदोलन में पूर्णकालिक योगदान देने का निर्णय लिया। यह निर्णय उनके वैचारिक विकास और राष्ट्रसेवा के प्रति समर्पण का प्रतीक था। उनके व्यक्तित्व में अनुशासन, सत्यनिष्ठा, निष्पक्षता और संगठन-क्षमता की विशेषताएँ जन्मजात थीं, जो आगे जाकर बड़े जनांदोलनों के संचालन और राष्ट्र-निर्माण में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुईं।

स्वतंत्रता संग्राम में योगदान

खेड़ा सत्याग्रह (1918)

1918 में खेड़ा जिले में भयंकर अकाल पड़ा। फसलें नष्ट हो गईं, पशुधन समाप्त होने लगा और किसान कर्ज़ के अत्यधिक बोझ तले दबते चले गए। कठिन परिस्थितियों के बावजूद ब्रिटिश सरकार ने राजस्व वसूली में कोई राहत नहीं दी। इस अन्याय ने किसानों में गहरा असंतोष पैदा किया। इसी समय सरदार पटेल ने गाँव-गाँव घूमकर किसानों की वास्तविक स्थिति का आकलन किया और आंदोलन का नेतृत्व संभाला।

पटेल ने किसानों को समझाया कि कानून के अनुसार जब फसल उत्पादन निश्चित सीमा से नीचे हो, तो कर माफ किया जाना चाहिए। उन्होंने किसानों को एकजुट किया और उन्हें अहिंसात्मक तरीके से अन्याय का प्रतिरोध करने की प्रेरणा दी। सत्याग्रह की रणनीति थी-कर नहीं देना, लेकिन किसी भी परिस्थिति में हिंसा न करना।

अंग्रेजों ने भूमि कुर्क करने, घरों पर ताले लगाने और पशुओं की नीलामी करने जैसी कठोर कार्रवाइयाँ शुरू कीं। आंदोलन की परीक्षा के इस दौर में पटेल की अद्भुत संगठन-क्षमता सामने आई। वे रोज़ किसानों को एकत्रित करते, उनका मनोबल बढ़ाते और कानूनी सहायता उपलब्ध कराते। अंततः सरकार को झुकना पड़ा और कर माफी की घोषणा हुई। खेड़ा सत्याग्रह ने पटेल को गुजरात के किसानों का **असली नेता** बना दिया और उनके राजनीतिक जीवन का मजबूत आधार तैयार किया।

बारडोली सत्याग्रह (1928)

1928 में बारडोली तालुका में 30% से अधिक कर-वृद्धि की घोषणा की गई। यह वृद्धि अन्यायपूर्ण थी क्योंकि उस वर्ष किसानों की फसलें भी प्रभावित थीं। किसानों में व्यापक असंतोष था, लेकिन उन्हें नेतृत्व की आवश्यकता थी। इसी समय पटेल को बुलाया गया।

पटेल ने कुछ ही दिनों में पूरे तालुका का भ्रमण किया, किसानों की मीटिंगें कीं और आंदोलन का खाका तैयार किया। उन्होंने स्पष्ट रूप से बताया कि कर-वृद्धि का विरोध केवल आर्थिक नहीं, बल्कि राजनीतिक अन्याय के विरुद्ध संगठित संघर्ष है। उन्होंने महिलाओं को भी आंदोलन से जोड़ा-बारडोली की महिलाएँ पटेल को "**सरदार**" कहकर संबोधित करने लगीं, और इसी उपाधि ने आगे चलकर उन्हें पूरे देश में प्रसिद्ध किया।अंग्रेज सरकार ने दमनकारी कदम उठाए-भूमि कुर्की, गिरफ्तारी, धमकी, यहाँ तक कि किसानों को डराने के लिए पुलिस बल बढ़ा दिया गया। लेकिन पटेल की शांतिपूर्ण, अनुशासित और रणनीतिक नेतृत्व क्षमता के सामने ये सभी प्रयास विफल रहे।

आंदोलन की व्यापकता और दृढ़ता ने अंग्रेजी सरकार को पुनर्विचार करने पर मजबूर किया। अंततः सरकार ने कर-वृद्धि वापस ली और कुर्क की गई भूमि किसानों को लौटा दी। बारडोली सत्याग्रह पटेल की संघर्ष-शैली, सामूहिक नेतृत्व और राजनीतिक सूझबूझ का सर्वोत्तम उदाहरण है।

गांधीवादी आंदोलनों में भूमिका

सरदार पटेल गांधीजी के प्रमुख सहयोगियों में से थे। असहयोग आंदोलन (1920-22), सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930-34) और भारत छोड़ो आंदोलन (1942) जैसे राष्ट्रीय अभियानों में पटेल अग्रिम पंक्ति में रहे।

असहयोग आंदोलन के दौरान पटेल ने गुजरात में विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार, शराबबंदी अभियान और जन-जागरण कार्यक्रमों का नेतृत्व किया। उनकी दृढ़ता और अनुशासन के कारण आंदोलन व्यापक रूप से सफल रहा।

सविनय अवज्ञा आंदोलन में जब गांधीजी ने दांडी यात्रा का निर्णय लिया, पटेल ने पूरे मार्ग का संगठनात्मक खाका तैयार किया। यात्रा में सुरक्षा, जनसमर्थन और प्रशासनिक प्रबंधन का दायित्व मुख्यत: पटेल के पास था।

भारत छोड़ो आंदोलन के समय अंग्रेजों ने पटेल को सबसे पहले गिरफ्तार किया क्योंकि वे जानते थे कि पटेल जैसे मजबूत और अनुशासित नेता के रहते आंदोलन को दबाना असंभव है। लंबे कारावास के बावजूद पटेल ने अपनी दृढ़ता बनाए रखी। उनकी भूमिका ने इन आंदोलनों को अनुशासित, व्यापक और प्रभावी बनाया, जिससे राष्ट्रीय स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त हुआ।

एकता के शिल्पी: रियासतों के एकीकरण में सरदार पटेल

स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारत भौगोलिक रूप से एक था, लेकिन राजनीतिक रूप से 562 रियासतों में बँटा हुआ था। यह भारत की राष्ट्रीय एकता के लिए सबसे बड़ी चुनौती थी। ऐसे समय में पटेल ने अद्‌वितीय राजनीतिक कौशल दिखाया।

राजनीतिक एकीकरण की रणनीति

पटेल ने रियासतों के शासकों से संवाद, प्रेरणा, कूटनीति और आवश्यक होने पर कठोर कदम-इन सभी का संतुलित उपयोग किया। उन्होंने "**एकीकरण या अलगाव नहीं, भारत ही एकमात्र विकल्प है**" का स्पष्ट संदेश दिया।

राज्य विभाग के सचिव वी.पी. मेनन के साथ मिलकर पटेल ने "**इंस्ट्रूमेंट ऑफ एक्सेशन**" का दस्तावेज तैयार कराया, जिसके माध्यम से अधिकांश रियासतों ने भारतीय संघ में स्वेच्छा से विलय स्वीकार किया। पटेल ने शासकों को सुरक्षा, सम्मानजनक प्रिवी-पर्स और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की गारंटी दी।

उन्होंने छोटे-बड़े सभी रियासतों को समान नज़र से देखा, किसी के साथ अत्याचार नहीं किया, लेकिन राष्ट्रीय हित के विरुद्ध किसी भी निर्णय को स्वीकार नहीं किया। कठोरता और कूटनीति का यह अनोखा मिश्रण ही रियासतों के एकीकरण की कुंजी बना।

जूनागढ़, हैदराबाद और कश्मीर के प्रश्न

जूनागढ़

जूनागढ़ का नवाब मुस्लिम था, जबकि जनसंख्या का विशाल बहुमत हिंदू था। नवाब पाकिस्तान में विलय चाहता था, जो भौगोलिक तथा जनभावना दोनों के विरुद्ध था। पटेल ने जनता के समर्थन से शांतिपूर्ण दबाव बनाया और अंततः जनमत-संग्रह के माध्यम से जूनागढ़ भारत में शामिल हुआ।

हैदराबाद

हैदराबाद का निज़ाम एक स्वतंत्र राष्ट्र बनाना चाहता था। राज्य में "रज़ाकार" नामक सशस्त्र संगठन हिंसा फैला रहा था। इस स्थिति ने दक्षिण भारत की सुरक्षा को खतरे में डाल दिया। पटेल ने कूटनीति और "पोलो ऑपरेशन" नामक सीमित सैन्य कार्रवाई का संयोजन अपनाया। कुछ ही दिनों में हैदराबाद भारत में शामिल हो गया।

कश्मीर

कश्मीर में महाराजा हरिसिंह विलय के निर्णय में देरी कर रहे थे। जब पाकिस्तान समर्थित कबायली हमलावरों ने हमला किया, तब पटेल ने तुरंत सैन्य और प्रशासनिक सहायता भेजी। महाराजा ने भारत में विलय-पत्र पर हस्ताक्षर किए और कश्मीर भारत का अभिन्न अंग बना।इन तीन जटिल मामलों को पटेल ने अद्भुत दृढ़ता और बुद्धिमत्ता से सुलझाया। इससे भारत की क्षेत्रीय अखंडता सुनिश्चित हुई।

राष्ट्र-निर्माण और प्रशासनिक सुधार

अखिल भारतीय सेवाओं की स्थापना

स्वतंत्र भारत को एक मजबूत प्रशासनिक ढाँचे की आवश्यकता थी। पटेल समझते थे कि यदि देश के प्रशासन को योग्य, निष्पक्ष और प्रशिक्षित अधिकारियों का सहयोग न मिले, तो लोकतांत्रिक व्यवस्था टिक नहीं सकेगी। इसलिए उन्होंने **IAS, IPS जैसी अखिल भारतीय सेवाओं को स्थापित किया।**

SHABDBRAHM

पटेल ने कहा-**"यदि भारत को एकता और स्थिरता चाहिए, तो इसके लिए एक सुदृढ़ लोकसेवा आवश्यक है। यह सेवाएँ देश की प्रशासनिक रीढ़ हैं।"**

उनके प्रयासों के कारण आज भी भारतीय प्रशासनिक व्यवस्था प्रभावशाली और संगठित रूप में कार्य कर रही है।

आंतरिक सुरक्षा और शांति स्थापना

1947 के विभाजन ने व्यापक हिंसा, दंगों, पलायन और सामाजिक अव्यवस्था को जन्म दिया। इस समय पटेल ने गृह मंत्री के रूप में पुलिस, सेना और प्रशासन को संगठित कर देश में शांति बहाल की।उन्होंने सीमाओं की सुरक्षा, साम्प्रदायिक तनाव को नियंत्रित करने, और राहत शिविरों की व्यवस्था करने में निर्णायक भूमिका निभाई। उनकी नीतियों ने नवगठित भारत को मजबूत दिशा प्रदान की।

स्थानीय स्वशासन और ग्राम-स्वराज

गांधीजी के ग्राम-स्वराज सिद्धांत से प्रेरित होकर पटेल ने पंचायत व्यवस्था और ग्रामीण प्रशासन को विकसित करने पर जोर दिया।उनका मानना था कि भारत की शक्ति गाँवों में निहित है, और यदि ग्राम-स्तरीय शासन सक्षम होगा, तभी राष्ट्रीय लोकतंत्र मजबूत होगा। उन्होंने स्थानीय निकायों को अधिकार देने, वित्तीय संसाधन उपलब्ध कराने और ग्रामीण विकास कार्यक्रमों को बढ़ावा देने की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया।

समकालीन भारत में सरदार पटेल की प्रासंगिकता

आज का भारत विविधताओं से भरा हुआ है-भाषा, धर्म, संस्कृति, आर्थिक स्थिति और क्षेत्रीय विविधताएँ। ऐसी स्थिति में पटेल का **राष्ट्रीय एकता का संदेश** पहले से अधिक प्रासंगिक है।

उनकी निर्णय-क्षमता, प्रशासनिक दृढ़ता, भ्रष्टाचार के प्रति शून्य सहनशीलता, और राष्ट्र-हित को सर्वोपरि रखने की नीति आज के नेतृत्व के लिए मार्गदर्शन प्रदान करती है। भारत के आधुनिक विकास, सुरक्षा, प्रशासनिक सुधार, राज्यों के बीच समन्वय और राष्ट्रीय नीतियों के संचालन में पटेल की विचारधारा अत्यंत महत्वपूर्ण है। स्टैच्यू ऑफ यूनिटी (2018) केवल उनकी मूर्ति नहीं, बल्कि भारत की एकता के प्रति उनके योगदान का प्रतीक है।

निष्कर्ष (Conclusion)

सरदार वल्लभभाई पटेल का जीवन भारतीय इतिहास में एक ऐसे महानायक के रूप में अंकित है, जिनकी दृढ़ इच्छा-शक्ति, नीतिगत स्पष्टता और संगठन कौशल ने भारत को सर्वाधिक कठिन परिस्थितियों में मार्ग दिखाया।उन्होंने सिद्ध किया कि यदि नेतृत्व साहसी और राष्ट्रहित के लिए समर्पित हो, तो अनेक जटिल चुनौतियों को सफलतापूर्वक सुलझाया जा सकता है।पटेल न केवल स्वतंत्रता संग्राम के आधारस्तंभ थे, बल्कि स्वतंत्र भारत के प्रथम और सर्वोत्तम राष्ट्र-निर्माताओं में से एक थे। वे निस्संदेह **"लौहपुरुष"**, **"भारतीय एकता के शिल्पी"** और भारतीय प्रशासनिक ढाँचे के **संस्थापक** हैं।

संदर्भ सूची (References)

Books (पुस्तकें)

1. वी.पी. मेनन - The Story of the Integration of the Indian States
2. सरदार पटेल - Speeches and Correspondences
3. भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के सरकारी दस्तावेज़
4. रामचंद्र गुहा - India After Gandhi
5. पर्सी ब्राउन - The Indian States Commission Reports
6. मौलाना आज़ाद - India Wins Freedom
7. शेख मोहम्मद अब्दुल्ला - Flames of the Chinar
8. नीरद सी. चौधरी - The Continent of Circe
9. लुईस फिशर - The Great Transition
10. हरीश चंद्र - भारत का राजनैतिक इतिहास
11. जवाहरलाल नेहरू - Glimpses of World History
12. ए.जी. नूरानी - The Kashmir Dispute
13. बिपन चंद्र - आधुनिक भारत
14. पी.एन. चोपड़ा - The Gazetteer of India
15. भारत सरकार - White Papers on Accession
16. 'ऑपरेशन पोलो' आधिकारिक रिपोर्ट
17. कर्नल दुनिश सिंह - Military Operations of India
18. एम.वी. कामत - Patel: A Life
19. राजमोहन गांधी - Patel: A Biography
20. शेखर बंधोपाध्याय - From Plassey to Partition
21. इंडियन स्टेट्स मैन्युअल - 1946 Edition

SHABDBRAHM